26

सरमा पणि संवाद सूक्त

भारतीय धर्म जीवन का और आध्यात्मिक जीवन का प्राणभूत वेद है। जैसे प्राण के बिना जीव वैसे ही वेदों के विना धर्मादि है। इसलिए इहलोक और परलोक फल विचार में वेदों का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। और वह वेद भगवान के निश्वासभूत हैं। इसलिए अपौरुषेय हैं। वह वेद चार भाग में विभक्त हैं। वे - ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, और अथर्ववेद। वहाँ ऋग्वेद का दशम मण्डल का एक सौ आठवां सूक्त (ऋ.वे. म-१०.१०८) सरमा पणि संवाद सूक्त है। यह एक अत्यन्त प्रसिद्ध संवाद सूक्त है। सरमा पाणि कथा के माध्यम से संवाद सूक्त प्रचलित है। और इस प्रकार इस पाठ में सरमा पणि संवाद सूक्त को उल्लिखित किया गया है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढकर आप सक्षम होंगे :

- सरमा पणि संवाद सूक्त का संहितापाठ तथा पदपाठ कर पाने में;
- सरमा पणि संवाद सूक्त के मन्त्रों का अन्वय कर पाने में;
- सरमा पणि संवाद सूक्त का अन्वय प्रतिपदार्थ जान पाने में;
- सरमा पणि संवाद सूक्त के व्याख्या कर पाने में;
- स्वयं से मन्त्र के अर्थ का भी व्याख्या कर पाने में; और
- मन्त्र में स्थित शब्दों का व्याकरण की दृष्टि से अर्थ ज्ञान कर पाने में।

26.1 मूलपाठ

किमिच्छन्ती सरमाप्रेदमानड् दूरेह्यध्वा जगुरिः पराचैः।
कास्मेहितिः का परितक्म्यासीत् कथं रसायाः अतरः पयांसि १॥

इन्द्रस्य दूतीरीषिता चरामि महः इच्छन्ती पणयो निधीन् वः।
अतिष्कदो भियसा तन्न आवत् तथा रसाया अतरं पयांसि॥२॥

की दृङिन्द्रः सरमे का दृशीका यस्येदं दूतीरसरः पराकात्।
आ च गच्छान्मित्रमेना दधामाथा गवां गोपतिर्नो भवाति॥३॥

नाहं तं वेद दभ्यं दभत्स यस्येदं दूतीरसरं पराकात्।
न तं गूहन्ति स्रवतो गभीरा हता इन्द्रेण पणयः शयध्वे॥४॥

इमा गावः सरमे या ऐच्छः परिदिवो अन्तान् सुभगे पतन्ती।
कस्त एना अव सृजादयुध्व्युतास्माकमायुधा सन्ति तिग्मा॥५॥

अस्येना वः पणयो वचांस्यनिषव्यास्तन्वः सन्तु पापीः।
अधृष्टो व एतवा अस्तु पन्था बृहस्पतिर्व उभया न मृळात्॥६॥

अयं निधिः सरमे अद्रिबुध्नो गोभिरश्वेभिरवसुभिर्न्यृष्टः।
रक्षन्ति तं पणयो ये सुगोपा रेकुपदमलकमा जगन्थ॥७॥

एह गमन्नृषयः सोमशिता अयास्यो अङ्गिरसो नवग्वाः।
त एतमूवं वि भजन्त गोनामथैतदृचः पणयो वमन्नित्॥८॥

एवा च त्वं सरम आजगन्थ प्रबाधिता सहसा दैव्येन।
स्वसारं त्वा कृणवै मा पुनर्गा अप ते गवां सुभगे भजाम॥९॥

नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वम इन्दो विदुराङ्गिरसश्च घोराः।
गोकामा मे अच्छदयन्यदायम अपातं इतपणयो वरीयः॥१०॥

दूरमित पणयो वरीय उद् गावो यन्तु मिनतीर्ऋतेन।
बृहस्पतिर्या अविन्दन्निगूहळाः सोमो ग्रावाण ऋषयश्च विप्राः॥११॥

26.1.1 मूलपाठ की व्याख्या : श्लोक 1-3

किमिच्छन्ती सरमाप्रेदमानड् दूरेह्यध्वा जगुरिः पराचैः।
कास्मेहितिः का परितक्म्यासीत् कथं रसायाः अतरः पयांसि १॥

पदपाठ - किम्। इच्छन्ती। सरमा। प्र। इदम्। आनट्। दूरे। हि। अध्वा। जगुरिः। पराचैः। का। अस्मेऽहितिः। का। परिऽतक्म्या। आसीत्। कथम्। रसायाः। अतरः। पयांसि॥१॥

अन्वय – सरमा किम् इच्छन्ती इदम् प्र आनट्। पराचौः जगुरिः अध्वा दूरे हि। का अस्मेहितिः का तरितक्म्या आसीत्। कथं रसायाः पयांसि अतरः।।१।।

अन्वय का अर्थ – (सरमा) इन्द्र की दूती सरमा नाम देवशुनी (किम् इच्छन्ती) क्या कामना करती हुई अथवा प्रार्थना के लिए (इदम् प्र आनट्) इस स्थान को प्राप्त हुई? (अध्वा दूरे हि) यहाँ आने का मार्ग बहुत ही दूर, अत्यन्त दूर है। (पराचौः) ज्ञान प्रकाश से विमुखो के द्वारा यह मार्ग अलक्षित है, (जगुरिः) कोई भी भली भाँती जाने वाला इस मार्ग को प्राप्त हो सकता है। अथवा योजन कोष चलने पर यह सरमा यहाँ आई है। हे सरमे! (का अस्मेहितिः) हमारे निमित क्या अर्थहित है? तुम किस प्रयोजन से हमारे लिए यहाँ आयी हो तुम्हारी (का परितक्म्या आसीत्) गति कैसे हुई? तुम्हारा गमन अथवा भ्रमण किस प्रकार का था। (कथं रसायाः पयांसि अतरः) रसानामक नदी के जलराशि को आपने कैसे पार किया?।।१।।

व्याख्या – मेघों में वृष्टि से पूर्व विद्युत् के चमकनें से गर्जना सरकती हुई प्रवृत होती है वह ही यहाँ अलंकार में सरमा कहीं गई है मेघ, धारा, नदी उसके पार जाना ही सरण – उसका सरकना है, मेघों के कृष्ण वर्ण होने से कृष्ण आकृति ही रात्री है। अथवा मेघ की गर्जना क्या अन्वेषण करती हुई इस स्थान को प्राप्त हुई, अज्ञानयों के द्वारा यह मार्ग अलक्षित है, इसलिए कोई भलीभांति जानने वाला ही इस मार्ग को प्राप्त हो सकता है, हमारे निमित क्या अर्थ भावना है आप कैसे घनघोर रात्री में रसा नदी के जल को पार करके यहाँ इतनी दूर आई हो।

सरलार्थ – यहाँ पणि ने सरमा के प्रति कहा की आप किस प्रार्थना के लिए यहां आई हो? यह मार्ग तो बहुत दूर का है। इस मार्ग पर आते समय पीछे की और दृष्टि घुमाने पर यहाँ आना सम्भव नहीं हो सकता। हमारे पास ऐसी कौन सी वस्तु है, जिसके लिए तुम आई हो इतनी घनी रात में नदी के जल को कैसे पार किया?

व्याकरण

- **इच्छन्ती** – यहाँ इष्-धातु से शतृप्रत्यय और स्त्री ङीप्-प्रत्यय करने पर।
- **आनट्** – आनट् यहा पर आङ्पूर्वक नशि-धातु से लुङि मन्त्रेघस- इत्यादि से च्लि लुक छन्दस्यपिदृश्यते इससे आट आगम।

इन्द्रस्य दूतीरीषिता चरामि महद इच्छन्ती पणयो निधीन् वः।
अतिष्कदो भियसा तन्न आवत् तथा रसाया अतरं पयांसि॥२॥

पदपाठ – इन्द्रस्य। दूतीः। इषिता। चरामि। महः। इच्छन्ती। पणयः। निऽधीन्। वः। अतिऽस्कदः। भियसा। तत्। नः। आवत्। तथा। रसायाः। अतरम्। पयांसि॥२॥

अन्वयः – (हे) पणयः, इन्द्रस्य दूतीः (तेन एव) इषिता (अहं) वः महः निधीन् इच्छन्ती चराम्। अतिस्कन्दः भियसा तत् नः आवत्। तथा रसायाः पयांसि अतरम्।।२।।

अन्वयार्थ – हे (पणय:) यह असुर का नाम, जीवन का प्रकाशरहित सामान्य इन्द्रिय क्रियाओं की शासकशक्ति का (अहम् इन्द्रस्य दूती:) लाने वाली, सन्देश वाहिका (इषिता) मुझे उसी के द्वारा भेजा गया है (व:) तुम्हारे लिए, तुम्हारे द्वारा हरण की गई गायों को ले जाने के लिए (मह: निधीन्) इन्द्र की जलनिधि अथवा महानिधी को (इच्छन्ती चरामि) चाहती हुई यहाँ विचरण कर रही हूँ। (अतिस्कन्द:) आक्रमण के (भियसा) भय से, अथवा अतिक्रमण होने के भय से (तत्) नदी जल ने भी (न:) मेरी, (आवत्) रक्षा की। (तथा) उसी प्रकार से मैंने (रसाया: पयांसि अतरम्) रसा नदी के जल को पार किया।।२।।

व्याख्या – उसके बाद सरमा ने पणीयों नामक असुरों से कहा मैं इन्द्र की दूती: सुपांसुलुगिति प्रथमा एकवचन का सुश्छान्दस होने पर मैं उनके द्वारा भेजी गई होने से तुम्हारे इस स्थान पर विचरण कर रही हूँ। जिन गौ निधि को तुमने पर्वत की गुफाओं में छुपाया है उस महोमहत निधी बृहस्पति की गोनिधी चाहती हुई यहाँ विचरण कर रही हूँ। और अतिष्कद: 'स्कन्दिर्गति शोषण धातु से भावेक्विप् करने पर अतिष्कन्दात् अत्क्रिमण' होने के भय से उस नदी जल ने मेरी रक्षा की। और उस प्रकार से रसा नदी के जल को पार करके मैं यहाँ पर आयी हूँ।।२।।

सरलार्थ – (सरमा कहती है) हे पणी, इन्द्र की दूती रूप से मैं यहाँ आई हूँ। आपने जो गोरूप धन को एकत्रित किया है, उसे ग्रहण करने की मेरी इच्छा है। जल ने मुझे बचाया। जल का डर तो हुआ था परन्तु उसको लाँघ कर मैं चली आई। इस प्रकार मैं नदी को पार कर यहाँ चली आई।

व्याकरण

- **आवत्** – यहाँ पर अवते: लङि आवत् यह रूप है।
- **पयांसि** – पयस्-शब्द का प्रथमाबहुवचन में जस् प्रक्रियाकार्य में पयांसि यह रूप बनता है।

की दृङ्ङिन्द्रः सरमे का दृशीका यस्येदं दूतीरसरः पराकात्।
आ च गच्छान्मित्रमेना दधामाथा गवां गोपतिर्नो भवाति।।३।।

पदपाठ – कीदृङ्। इन्द्रः। सरमे। का। दृशीका। यस्य। इदम्। दूती:। असरः। पराकात्। आ। च। गच्छात्। मित्रम्। एन। दधाम। अथ। गवाम्। गोऽपति:। न:। भवाति:।।३।।

अन्वय: – (हे) कीदृङ् इन्द्र:, का दृशीका, यस्य दूती: (त्वम्) पराकात् इदम् असर:। आ च गच्छात् (वयम्) एन मित्रं दधाम। अथ न: गवां गोपति: भवाति।।३।।

अन्वयार्थ: – हे (सरमे, कीदृङ् इन्द्र:) किस प्रकार (का दृशीका) उसकी दृष्टि किस प्रकार की, दृष्टि रूपा सेना कितनी है? उसके लक्षण क्या है (यस्य दूती:) जिस इन्द्र की दूती आप (पराकात्) दूर देश से (इदम् असर:) इस स्थान को प्राप्त हुई? इस प्रकार उसको कहकर अब वे परस्पर कहते है – आगच्छात् च) यदि यह सरमा हमारे साथ आ जावे, इन्द्र को छोड़कर हमारे साथ रहो (अथ) तो (एना मित्रं दधाम) हम इसको अपना मित्र बनावें। (अथ) तो यह भी (न:

गवां गोपतिः भवाति) हमारी गायों की स्वामी हो। अथवा वह इन्द्र यहाँ आये तो हम उनसे मैत्री करें। और वह इन्द्र हमारा गोपति हो।।३।।

व्याख्या – पणी ने सरमा के प्रति कहा आपके स्वामी इन्द्र किस प्रकार है,कितने शक्तिशाली है उनकी दूर दृष्टि किस प्रकार की है, उसकी सेना कितनी विस्तृत है, जिसकी दूती तुम बहुत दूर से यहाँ पर इस स्थान को प्राप्त हुई। इस प्रकार कह कर अब वे परस्पर कहते हैं ये सरमा आये '(आगच्छात्) और आगच्छतु गमर्लेट् में आडागम' होने पर स्वामी हो केवल एक गाय की स्वामी नहीं अपितु अनेक गायों की स्वामी हो।।३।।

सरलार्थ – पणि ने कहा – जिस इन्द्र की दूतीरूप से आप इतनी दूर से आई हो, वे इंद्र कैसे है। उनका कितना पराक्रम है, और उनकी कैसी सेना है। इन्द्र हमारी रक्षा करे। इन्द्र को मित्ररूप से अङ्गीकार करने में हम प्रस्तुत है। वह इन्द्र हमारी गायों को स्वीकार करके उनका स्वामी हो।

व्याकरण

- आगच्छत् यहाँ पर उपसर्ग धातु का व्यवहित रूप से प्रयोग है। यहाँ आगच्छत् यह रूप उस गम्-धातु से लेट् आटागम प्रक्रिया कार्य का रूप है।
- गवाम्-गो-शब्द का षष्ठी बहुवचन में आम् गवाम् यह रूप है।

पाठगत प्रश्न 26.1

1. किमिच्छन्ती इत्यादिवाक्य को किसने किसके प्रति कहा?
2. इषति इसका क्या अर्थ है?
3. किसकी दूतीरूप से सरमा आयी?
4. पणीयों ने इन्द्र के लिए क्या देना अङ्गीकार किया?
5. कीदृङ् इसका क्या अर्थ है?

26.1.2 मूलपाठ की व्याख्या : श्लोक 4-5

नाहं तं वेद दभ्यं दभत्स यस्येदं दूतीरसरं पराकात्।
न तं गूहन्ति स्रवतो गभीरा हता इन्द्रेण पणयः शयध्वे।।४।।

पदपाठ – न। अहम्। तम्। वेद। दभ्यम्। दभत्। सः। यस्य। इदम्। दूतीः। असरम्। पराकात्। न। तम्। गूहन्ति। स्रवतः। गभीराः। हताः। इन्द्रेण। पणयः। शयध्वे।।४।।

अन्वय – अहं तं दभ्यं न वेद (अपितु) सः तभत्, यस्य दूतीः (अहम्) पराकात् इदम् असरम्। स्रवतः गभीराः तं न गूहन्ति। (हे) पणयः, हताः (यूयं) शयध्वे।।४।।

टिप्पणियाँ

अन्वयार्थः - (अहं) सरमा (तं) इन्द्र के (दभ्यं) दम्भ प्रहारक शस्त्र को नहीं जानती हूँ जिससे वह प्रहरित करता है (न वेद) नहीं जान सकती। (सः तभत्) अपितु वह इन्द्र अन्यों को पराजित करता है अथवा विनाश करता है सम्पूर्ण शक्ति को वश में करता है। (यस्य दूतीः) जिसकी दूती के रूप में मैं नियुक्त हूँ (अहम्) सरमा (पराकात्) अतिदूरदेश से, परलोक से, (इदम् असरम्) तुम्हारे इस स्थान को प्राप्त हुई। (स्रवतः गभीराः) गम्भीर स्रोत भी (तं न गूहन्ति) उस इन्द्र का विरोध नहीं करते अपितु उसका समर्थन करते है, हम उसकी महिमा से समुद्र के प्रति बहते है ऐसा वे कहती है वह ही हमको प्रकट करता है। इसलिए हे (पणय) इन्द्रिय भोग के परायण असुरो! (इन्द्रेण हताः) मारे जाने पर तुम (शयध्वे) धराशयी हो जाओगे।।४।।

व्याख्या - सरमा कहती है हे पणय उस इन्द्र को कोई पराजित नहीं कर सकता ऐसा मैं जानती हूँ अपितु वह इंद्र ही सभी को जीतता है, 'दभेर्लेटिरूप वाक्यभेद होने से निघात है' जिसकी दूती मैं तुम्हारे इस स्थान को प्राप्त हुई अतिदूरदेश से यहाँ प्राप्त हुई। इन्द्रोहिंसितव्योनभवती- यहाँ पर कहते है जल स्रवण उसका आचरण करती है 'आचारार्थ में क्विप् तुगागम जस् का यह स्रवणशीलाः रूप है' भयंकर नदियाँ उस इन्द्र के अस्तित्व को छुपा नहीं सकती। किंतु आविष्कार करती हुई कहती है कि हम जिसकी महिमासे समुद्र को प्राप्त होती हैं। 'गुहूसंवरणे भौवादिक है'। उस हे पणीयों तुम इन्द्र के उस प्रकार के पराक्रम से मारे जाओगे शयध्वे शीङ्स्वमे बहुलंछन्दसि इससे शपोलुगभाव।।४।।

सरलार्थ - सरमा ने कहा -जिस इन्द्र की दूतिरूप से मैं यहाँ आई हूँ उसको कोई भी पराजित नहीं कर सकता। वह इन्द्र ही सभी को पराजित करता है। गहन गम्भीर नदियाँ भी उनकी गति को रोकने में समर्थ नहीं है। हे पणीयों तुम सब भी इन्द्र के उस पराक्रम से आहत होकर निश्चित रूप से शयन करोगे।

व्याकरण

- **स्रवतः** - स्रवतेः आचारार्थ में क्विप् तुगागम करने पर और जस प्रक्रिया कार्य में स्रवतः यह रूप है।
- शयध्वे यहाँ पर बहुलं छन्दसि इससे शप् का लुगभाव।

इमा गावः सरमे या ऐच्छः परिं दिवो अन्तान् सुभगे पतन्ती।
कस्त एना अव सृजादयुध्व्युतास्माकमायुधा सन्ति तिग्मा।।५।।

पदपाठ - इमाः। गावः। सरमे। याः। ऐच्छः। परिं। दिवः। अन्तान्। सुऽभगे। पतन्ती। कः। ते। एनाः। अव। सृजात्। अयुध्वी। उत। अस्माकम्। आयुधा। सन्ति। तिग्मा।।५।।

अन्वयः - (हे) सुभगे सरमे, दिवः अन्तान् परि पतन्ती इमाः गावः याः (त्वम्) ऐच्छः, एनाः ते कः अयुध्वी अव सृजात्। उत अस्माकम् आयुधा तिग्मा सन्ति।।५।।

अन्वयार्थः -'नाहं तं वेद दभ्यं दभत् सः ... हता इन्द्रेण पणयः शयध्वे' ये सुनकर क्रुद्ध पणी कहते हैं -

(सुभगे सरमे) हे सौभाग्यशाली सुन्दरी सरमे (दिवः अन्तान्) आकाश में एक प्रान्त से अन्य प्रान्तो तक (परिपतन्ती) चारों और जाती हुई भ्रमण करती हुई प्राप्त हुई (इमाः गावः) ये वे गायें हैं (याः) जिनका तुम अन्वेषण करती हो (ऐच्छः) कामना करती हो। (एनाः) ये गायें (कः अयुध्वी) कौन बिना युद्ध के (ते अव सृजात्)तुम्हारे लिए त्याग सकता है। (उत) और भी (अस्माकम् आयुधा तिग्मा सन्ति) हमारे पास भी तीक्ष्ण शस्त्र है। हमारे साथ युद्ध करके कौन गायों को ले जा सकता है।।५।।

व्याख्या – क्रुद्ध पणी प्रत्युतर में कहते हैं हे सुभगे सौभाग्यवती सरमे द्युलोक के अन्त पर्यन्त से इधर-उधर गिरती हुई विचरती हुई इन गायों को प्राप्त करने के लिए तुम यहाँ आयी हो, कौन इन गायों को तुम्हारे लिए युद्ध के बिना देगा अर्थात् कौन बिना युद्ध के इन गायों को हमारे इस पर्वत से छुड़ाकर ले जाए। 'सृजे लेंट का रूप अयुध्वी युध में क्त्वाप्रत्यय करने पर स्नात्वादयश्चेति निपातन करने से नञ्समासत्वात्त्यबादेशभाव होने पर और नञघःप्रकृतिस्वर होने पर' और हमारे तीक्ष्ण आयुधों से लड़कर कौन इन गायों को छुड़ा सकता है।।५।।

सरलार्थ – पणी ने कहा- हे सुन्दरी सरमा तुम स्वर्ग की सीमा से आ रही हो इसलिए मेरे गायों के मध्य में जो-जो आप चाहती है उस-उस को मैं तुम्हे दे सकता हूँ। बिना युद्ध के कौन तुम्हे गाय देता है। हमारे समीप में भी बहुत तीक्ष्ण आयुध हैं। (अर्थात् हम भी युद्ध लड़ने में समर्थ है यह अर्थ है)।

व्याकरण

- **अवसृजात्** – अवपूर्वक सृज्-धातु से लेट् प्रक्रिया में अवसृजाद् रूप बनता है।
- **अयुध्वी** – युध्-धातु से क्त्वाप्रत्यय करने पर स्नात्व्यादयश्च इससे निपात करने पर नञ्समास होने से क्त्वाप्रत्यय को ल्यप् आदेश अभाव प्रक्रिया कार्य में अयुध्वी रूप बनता है।

अस्येना वः पणयो वचांस्यनिषव्यास्तन्वः सन्तु पापीः।
अधृष्टो व एतवा अस्तु पन्था बृहस्पतिर्व उभया न मृळात्।।६।।

पदपाठ – **असेन्या। वः। पणयः। वचांसि। अनिषव्याः। तन्वः। सन्तु। पापीः। अधृष्टः। वः। एतवै। अस्तु। पन्थाः। बृहस्पतिः। वः। उभया। न। मृळात्।।६।।**

अन्वय – (हे) पणयः, वः वचांसि असेन्या। (युष्माकम्) पापीः तन्वः अनिषव्याः सन्तु, वः पन्थाः एतवै अधृष्टः अस्तु। (किन्तु) बृहस्पतिः वः उभया न मृळात् ।।६।।

अन्वयार्थः – हे (पणयः) आध्यात्मिक प्रकाश के, दिव्यसत्य के और दिव्य विचार के शत्रुओं पणि नामक दस्युओं! (वः वचांसि) तुम्हारे द्वारा जो पहले कहे गए वचन (असेन्या) सेना बल रहित, सेनायोग्य के नहीं हैं, हमारे सेना के सम्मुख व्यर्थ ही हैं यह भाव है। तुम्हारा (पापीः तन्वः) पापी शरीर है (अनिषव्याः सन्तु) जो बाणों से प्रभावि तन हो, अथवा तुम्हारे काम पाप युक्त होने से और पराक्रमरहित होने से वह बाणों के योग्य नहीं हैं, (वः) तुम्हारा (पन्थाः) मार्ग (एतवै)

जाने को (अधृष्टः अस्तु) भागने को, दुर्गम हो, सरल गामी न हो। (बृहस्पतिः वः उभया न मृळात्) किन्तु बृहस्पति देवता तुहारे लिए दोनों भूलोक और स्वर्गलोक में कुछ भी सुख नहीं देंगे, तुम्हारा कुछ भी कल्याण नहीं करेंगे।।६।।

व्याख्या – उसने (सरमा ने) उन पणियों से कहा की तुम्हारे जो पूर्वोक्तवचन है वो सेना के योग्य नहीं है 'सेनाशब्द से अर्हतीत्यर्थ में छन्दसिचेति यत्प्रत्यय और नञःसमास करने पर बनता है।' ययतोश्चातदर्थ इससे उत्तरपदान्तोदात्तत्व है। वैसे ही तुम्हारा शरीर भी बाणों के योग्य नहीं है पराक्रमरहित होने से पूर्व वत्प्रत्यय ओर्गुण इससे गुण और उसी प्रकार स्वर करने पर। जो पापी पापयुक्त सम्पूर्ण छन्दसीवनिपाविती प्रत्यय करने पर। जसःशः और तुम्हारा पंथामार्ग वैसे ही निम्न जाने योग्य है असमर्थ हो इण्गतौ इससे तुमर्थेतवै प्रत्यय करने पर तवैचान्तश्चयुगपद-धातु से प्रत्ययान्त युगपद उदात्तत्व होने पर वहाँ हेतु कहते है तुम्हारा दोनों प्रकार का पूर्वोक्त देह को बृहस्पति और इन्द्र द्वारा प्रेरित होने से सुख को प्राप्त नहीं होगे किंतु पीड़ा आदि कष्ट को प्राप्त करोगे।।६।।

सरलार्थ – सरमा- आपकी बात सैनिकों के योग्य नहीं है। तुम्हारे शरीर में पाप विद्यमान है। यह शरीर कहीं इन्द्र के बाण का लक्ष्य न हो जाए, देवता कभी भी आक्रमण कर सकते हैं कोई भी नहीं जानता है। मुझे संदेह है की पीछे बृहस्पति आपको क्लेश देंगे। यदि आप गाय नहीं दोगे तो आपदायें सन्निकट ही है।

व्याकरण

- **असेन्या** – सेना-शब्द से तदर्हतीत्यर्थ में और छन्दसि च इससे यत्प्रत्यय और नञ्समास। यहाँ ययतोश्चातदर्थे इससे उत्तरपद अन्तोदात्त है।
- एतवै यहाँ पर इण् गतौ इस गत्यर्थक-इण्-धातु से तुमर्थे तुमर्थे से-सेनसेऽसेन्-क्से-क्सेनध्यै-अध्यैन्-कध्यै-कध्यैन्-शध्यै-शध्यैन्-तवै-तवेङ्-तवेनः इससे तवैप्रत्यय है। यहाँ तवै चान्तश्च युगपद् इस धातु प्रत्ययान्त को युगपद् उदात्त हुआ है।

पाठगत प्रश्न 26.2

1. किसको कोई भी पराजित नहीं कर सकता है।
2. दभत् यहाँ पर दभ् धातु किस अर्थ में है?
3. किसके बिना पणि गायों को नहीं देना चाहते हैं?
4. सुभगशब्द का क्या अर्थ है?
5. किसके वचन सैनिक योग्य नहीं है?
6. बृहस्पति उसके पश्चात् कैसे क्लेश देंगे यह सरमा को आशङ्का है?

26.1.3 मूलपाठ की व्याख्या : श्लोक 7-8

अयं निधिः सरमे अद्रिबुध्नो गोभिरश्वेभिरवसुभिर्न्यृष्टः।
रक्षन्ति तं पणयो ये सुगोपा रेकु पदमलकमा जगन्थ॥७॥

पदपाठ - अयम्। निऽधिः। सरमे। अद्रिऽबुध्नः। गोभिः। अश्वेभिः। वसुऽभिः। निऽऋष्टः। रक्षन्ति। तम्। पणयः। ये। सुऽगोपाः। रेकु। पदम्। अलकम्। आ। जगन्थ॥७॥

अन्वय - सरमे गोभिः अश्वेभिः वसुभिः न्यृष्टः अयं निधिः अद्रिबुध्नः तं पणयः रक्षन्ति ये सुगोपाः अलकम् रेकु पदम् आ जगन्थ।

अन्वयार्थ - हे (सरमे) इन्द्र की दूती (गोभिः अश्वेभिः वसुभिः) धेनू, घोड़े और अन्य ऐश्वर्य के द्वारा (न्यृष्टः) परिपूर्ण (अयं निधिः) यह हमारा कोष (अद्रिबुध्नः) मेघ जिसके बंधक है, सुदृढ आश्रय स्थान जिसका है, यह पर्वत गुहा के अन्दर गुप्त रूप से सुरक्षित रूप से संवृत यह अर्थ है। (तम्) पूर्वोक्त निधि को (पणयः) पणि नामक दस्यु (रक्षन्ति) रक्षा करते है (ये) पणय (सुगोपाः) श्रेष्ठ रक्षक है। इसलिए तुम (अलकम्) व्यर्थ ही (रेकु पदम्) शङ्काकुल स्थान को (आ जगन्थ) आया है।

आध्यात्मिक तात्पर्य - इस मन्त्र में जो निधि का सङ्केत है वह इन्द्र के दिव्यैश्वर्यकोष, -हमारे आत्मा को और दिव्य पवित्र मन गायें, दिव्य उषस् दिव्य का सत्य सूर्य और रश्मियाँ, उसके घोड़े अध्यात्म प्रकाश शक्ति से युक्त, और उसका धन है, उसकी रश्मियाँ और उसकी शक्तीं का फलभूत शान्ति आनन्द और ऐश्वर्य है।

और पणि अनृत अज्ञान और कुटिल शक्ति के, प्रकाशरहित सामान्येन्द्रिय क्रियाओं के शासक शक्ति। इन पणियों के द्वारा हमारे दिव्य ऐश्वर्य भौतिक सत्ता का पर्वत में, देहाद्र गुहा में अन्धकार माया से अवचेतन भौतिक सत्ता से प्रच्छन्न रूप से स्थापित हैं।

सरमा इन्द्र की अन्तर्ज्ञान शक्ति है। इन्द्र से प्रेरित वह हमारे प्रच्छन्न ऐश्वर्य को हमे प्राप्त कराती है। पणि सरमा संवाद की यह पृष्ठभूमि प्रस्तुत मन्त्र में सुस्पष्ट निर्दिष्ट है। विस्तरार्थ इस सूक्त के अन्त में उपन्यस्त आध्यात्मिक व्याख्यान अनुशीलनीय है॥७॥

व्याख्या - और वे पुनः कहते हैं हे सरमे यह निधि हमारे कोष में बन्ध बन्धन में 'बन्धेरर्बधिबुधीचेति न प्रत्ययः बुध-इत्यादेश होने पर अद्रिबन्धक जिसका' उस प्रकार आहत गायों के द्वारा, घोड़े के द्वारा और वसुभिरात्मीय धन प्राप्त होता है। 'ऋषि गतौ क्तप्रत्यय करने पर श्वीदितो निष्ठायाम् इससे इट्प्रतिषेध करने पर गतिरनन्तर इससे गति को प्रकृति स्वर होने पर सुगोपाः गुपू रक्षणे आयप्रत्ययान्त से क्विप् करने पर आतो लोपयलोप करने पर सुष्ठु गोपायितारोयेपणयः' वे असुर उस निधि की रक्षा और पालन करते है। रेकु रेकृशंकायाम् औणादिक उप्रत्यय करने पर शंकित गोभिः शब्दायमान पद हमारे पालित स्थान को व्यर्थ ही प्राप्त हुई। गमेर्लेट का यह रूप है।

सरलार्थः – पणि कहता है – हे सरमा मेरी सम्पत्ति पर्वतों के द्वारा सुरक्षित विद्यमान है तथा गायों, घोड़ों और अन्यान्य धन से परिपूर्ण है। रक्षा कार्य में समर्थ पणि लोग इस सम्पत्ति के रखवाली करते हैं। इसलिए आपका यहाँ आना व्यर्थ है। (अर्थात् इन्द्र के भयानकता को प्रदर्शित करके हम से गायों को प्राप्त करने में आप असमर्थ है।)

व्याकरण

- **अद्रिबुध्नः** – यहाँ पर बन्ध बन्धने इस धातु से नप्रत्यय करने पर बन्ध-इसको बुध-आदेश।
- **न्यृष्टः** – ऋषि गतौ इस धातु से क्तप्रत्यय करने पर श्वीदितो निष्ठायाम् इससे इट्प्रतिषेध।

एह ग॑मन्नृष॑यः॒ सोम॑शिता अ॒यास्यो॒ अङ्गि॑रसो॒ नव॑ग्वाः।
त ए॒तमू॒र्वं वि भ॑जन्त॒ गोना॒मथै॒तद्वचः॑ प॒णयो॒ वम॒न्नित्॥८॥

पदपाठ – आ। इ॒ह। ग॒म॒न्। ऋष॑यः। सोम॑ऽशिताः। अ॒यास्यः॑। अङ्गि॑रसः। नव॑ऽग्वाः। ते। ए॒तम्। ऊ॒र्वम्। वि। भ॒ज॒न्त॒। गोना॑म्। अथ॑। ए॒तत्। वचः॑। प॒णयः॑। वम॑न्। इत्॥८॥

अन्वय – सोमशिताः अयास्यः अङ्गिरसः नवग्वाः ऋषयः इह आ गमन्। ते एतं गोनाम् ऊर्वं वि भजन्त। अतः एतत् वचः पणयः वमन् इत्॥८॥

अन्वयार्थ – हे (सोमशिताः) सोम से आनन्द रसपान से तीक्ष्ण किये गए, प्रदीप्त तेज (अयास्यः) सत्य होने से सप्त शीर्षधिय आविष्कर्ता ऋषि (अङ्गिरसः ऋषयः) दिव्याग्नि के पुत्र, और उसकी शक्तिरूप दिव्य द्रष्टा उनके भूलोक गए प्रतिनिधि मनुष्यों के पूर्व पितर (नवग्वाः) ये नव मासों के अन्तर्यज्ञ करके परमज्योतिष और सत्यसूर्य की नव रश्मि प्राप्त हुई वे (इह आ गमन्) यहाँ तुम्हारे अद्रिगुहा में आयेंगे। (ते) वे सभी पूर्वोक्त ऋषि (एतं गोनाम् ऊर्वं) इन गायों को छोड़ दो (वि भजन्त) छोड़कर, उन गायों को छोड़ दो और उपभोग करो। (अथ) तब तुम (एतत् वचः) इस वचन को, 'व्यर्थ ही तुम इस शङ्काकुल स्थान को आयी हो' (पणयः) अध्यात्मप्रकाश के शत्रुओं, प्रकाश किरणों के अपहर्ता पणिनामकदस्यु ! (वमन् इत्) उनको छोड़ दो। इसलिए गर्वपूर्ण वचनों का परित्याग करो॥८॥

व्याख्या – सरमा पुनः कहती है हे पणय सोमशिता-सोम से तीक्ष्ण किये गए सोमपान से मत्ताः शिञ्निशाने कर्म करने से क्तप्रत्यय करने पर तृतीयाकर्मणीतिपूर्वपदप्रकृतिस्वर होने पर। उस प्रकार सरलगति से अथवा प्रशांत वायु के मध्य में कुछ गति प्रेरक वायु आकार इन रश्मियों, जलों के आच्छद्क को विभक्त छिन्न भिन्न कर देती हैं हे पणियों वाणिजों की भांति जल को छिपाने वाले मेघों यह तुम्हारा वचन और वमन जैसा होगा तुम्हे स्वीकार करना पड़ेगा।

सरलार्थः – सरमा कहती –सोमपान से प्रमत्त होकर अङ्गिरस और नवगण के साथ यहाँ आकर इन सभी गायों को आपसे छुड़ाकर लेकर जायेंगे। हे पणि उस समय में तुम्हें ऐसी दर्पोक्ति छोड़नी पड़ेगी। (तब आप कुछ भी करने में असमर्थ होंगे यह भाव है।)

व्याकरण

- **सोमशिताः** – यहाँ शिञ् निशाने इस धातु से कर्म में क्तप्रत्यय करने पर। तृतीया कर्मणि इस सूत्र से यहाँ पूर्वपदप्रकृतिस्वर।
- **आगमन् यहाँ पर गम का छन्दसि लुङ्लङ्लिटः** – इस सूत्र से सार्वकालिक लुङ्। यहाँ लृत आदि होने से च्लि को अङ्।
- गोनाम् यहाँ पर गो को छन्द में नुडागम।

पाठगत प्रश्न 26.3

1. पणियों की सम्पत्ति कैसे रक्षित है?
2. पणियों के सम्पत्ति किनके द्वारा परिपूर्ण है?
3. क्यों अङ्गिरस और नवगण प्रमत्त है?
4. अङ्गिरस और नवगण क्या सिद्ध करेंगे?
5. सोमशिताः इस शब्द का क्या अर्थ है?

26.1.4 मूलपाठ की व्याख्या : श्लोक 9-11

एवा च त्वं सरम आजगन्थ प्रबाधिता सहसा दैव्येन।
स्वसारं त्वा कृणवै मा पुनर्गा अप ते गवां सुभगे भजाम॥९॥

पदपाठ – एव। च। त्वम्। सरमे। आऽजगन्थ। प्रऽबाधिता। सहसा। दैव्येन। स्वसारम्। त्वा। कृणवै। मा। पुनः। गाः। अप। ते। गवाम्। सुऽभगे। भजाम॥९॥

अन्वय – (हे) सरमे, दैव्येन सहसा प्रबाधिता एव त्वं च आजगन्थ, त्वा स्वसारं कृणवै। पुनः मा गाः। (हे) सुभगे गवां ते अप भजाम॥९॥

अन्वयार्थ – हे (सरमे) हे इन्द्रदूती, देवशुनि। (दैव्येन सहसा) इन्द्रादि देवों के बल से (प्रबाधिता एव त्वं) प्रेरित और विवश की गई तुम यहाँ (च आजगन्थ) आई हो। च यह पादपूर्ण (त्वा स्वसारं कृणवै) हम तुम्हे अपनी बहन, बहन के समान सहयोग करते हैं। (पुनः मा गाः) तुम हमारे यहाँ आ जाओ। (हे सुभगे) हे सौभाग्यशाली, शोभा ऐश्वर्ययुक्त, सुन्दरी सरमे (गवां ते अप भजाम) गायों का एक गायों का भाग हम तुम्हें देते हैं, अथवा हम गायों का तुम्हारे साथ विभाजन करते है॥९॥

व्याख्या – व्याख्या–उसके द्वारा ऐसा कहने पर पणि ने कहा हे सरमे तुम देवसंबन्धि के सहसा बल से बाधिता जैसे, वैसे वलपुर प्राप्त होकर स्थित गायों के द्वारा उससे पीड़िता तुम यहाँ आयी

टिप्पणियाँ

हो तो आगतवत्यसि च शब्द अर्थ में निपातैर्यद्यदिहन्तेतिङोनिघाताभाव गमेर्लिटथलरूप होने पर सहसुप यहाँ पर सहेतियोगविभाग से समास तिङिचोदात्तवर्तीति गति के निघात और नित्स्वर हो तो तुम्हे अपनी बहन के रूप में स्वीकार्य करते हैं समूह अपेक्षा एकवचन में तुम पुनः हमारे पास आ जाना इन्द्रादियों के पास आ जाना तो हे सुभगे सरमे तुम अपने गायों के समूह को पर्वत से निकालकर तुम और हम दोनों सेवा का उपभोग करेंगे।

सरलार्थ – पणिगण प्रत्युत्तर में कहते है – हे सरमा, देवों ने डरकर तुम्हे यहाँ भेजा है, इसलिए तुम यहाँ आई हो। तुम्हे हम अपनी बहन समझते हैं। तुम अब वापस मत जाना जब तक चाहो यहाँ ही निवास करो। सुन्दरी हमारे गोधन के भाग को भी स्वीकार करो।

व्याकरण

- आजगन्थ यहाँ पर आ-पूर्वक गम्-धातु से लिट् थल् प्रक्रिया में जगन्थ रूप। आपूर्वक गम् का सह सुपा इससे सह इसके योग विभाग से समास। यहाँ तिङि चोदात्तवतीति गति को र्निघात और नित्स्वर।
- स्वसारम् यहा पर स्वसृशब्द का द्वितीया एकवचनान्त का रूप है।

नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वम इन्द्रो विदुराङ्गिरसश्च घोराः।
गोकामा मे अच्छदयन्यदायम अपात इतपणयो वरीयः॥१०॥

पदपाठ – न अहम्। वेद। भ्रातृत्वम्। नो। इति। स्वसृऽत्वम्। इन्द्रः। विदुः। अङ्गिरसः। च। घोराः। गोऽकामाः। मे। अच्छदयन्। यत्। आयम्। अप। अतः। इत। पणयः। वरीयः॥१०॥

अन्वय – अहं भ्रातृत्वं न वेद। नो स्वसृत्वम्। इन्द्रः घोराः अङ्गिरसश्च विदुः। यत् (अहम्) आयम् (ते) मे गोकामाः अच्छदयन्। अतः (हे) पणयः वरीयः अप इत॥१०॥

अन्वयार्थ – (अहं भ्रातृत्वं न वेद) हे पणि, मैं भाई को नहीं जानती हूँ। (नो स्वसृत्वम्) और न ही बहन। अथवा न मैं तुम्हारे भ्रातृत्व को स्वीकार करती हूँ और न ही अपने को तुम्हारी बहन मानती हूँ। अब तो (इन्द्रः घोराः अङ्गिरसश्च विदुः) इन्द्र, शत्रूओं को भयङ्कर ताड़ित करने वाले को और अङ्गिरस को जानो। (यत् आयम्) जिससे मैं तुम्हारे स्थान आयी हूँ। अथवा (गोकामाः) गाय प्रकाश धेनू की कामना करती हूँ, ज्योति गायों के अभिलाषि इन्द्र आदि ने(मे अच्छदयन्) मुझे अपने रक्षा कवच से ढ़क कर यहाँ भेजा है, (अतः) इसलिए तुम (पणयः अप इत) इस स्थान से सुदूर जाओ। उसी में तुम्हारा (वरीयः) कल्याण होगा॥१०॥

व्याख्या – वह सरमा उनको प्रत्युत्तर में कहती है हे पणि मै भ्रातृत्व को नहीं जानती हूँ और न ही स्वसृत्व को जानती हूँ। उसको जानने वाले कहते है कि इन्द्र घोर शत्रुओं को और भयंकर अंगिरस तुम्हारे को दण्ड प्रदान करेंगे और इस स्थान से मैं इन्द्रादि को प्राप्त होउगीं अयपयगतौ लङ् का रूपतब मेरी गायों की कामना करने के लिए तुम्हारे द्वारा अपहरण की गई गायों की कामना करने वाले इन्द्रादि तुम्हारे इस स्थान पर आयेंगे। छद अपवारणे इस कारण से हे पणयों

अति दूर गायों को छोड़कर अन्य स्थान को चले जाओ। अथवा बहुत दूर देश को जाओ। इत् इण्गतौ लोटरूप वरीयः उरुशब्दादीय सुन करने पर प्रियस्थिर इत्यादिनावरादेश होने पर॥१०॥

सरलार्थ – सरमा कहती है –मैं भाई और बहन की बातों को नहीं समझ सकती। इन्द्र तथा पराक्रमी अङ्गिर वंशीया जानते है की गायें पाने के लिए रक्षापूर्वक उन्होंने मुझे यहाँ भेजा है। मैं उनका आश्रय पाकर ही यहाँ आई हूँ। इसलिए कहती हूँ की हे पणियों यहाँ से बहुत दूर चले जाओ।

व्याकरण

- आयम् यहाँ पर अय गतौ इस धातु से लङ् छन्द में रूप है।
- इण् गतौ इस धातु से लोट् प्रथमपुरूषद्विवचन प्रक्रिया कार्य में इतः रूप है।

दूरमित पणयो वरीय उद् गावो यन्तु मिनतीर्ऋतेन।
बृहस्पतिर्या अविन्दन्निगूहळाः सोमो ग्रावाण ऋषयश्च विप्राः॥११॥

पदपाठ – दूरम्। इत। पणयः। वरीयः। उत्। गावः। यन्तु। मिनतिः। ऋतेन। बृहस्पतिः। याः। अविन्दत्। निऽगूहळाः। सोमः। ग्रावाणः। ऋषयः। च। विप्राः॥११॥

अन्वय – (हे) पणयः (यूयं) वरीयः दूरम् इत। गावः ऋतेन मिनतीः उत् यन्तु। निगूळ्हाः याः (गाः) बृहस्पतिः अविन्दत् सोमः ग्रावाणः विप्राः ऋषयः च (अविन्दन्)॥११॥

अन्वयार्थ – हे (पणि) हे पणि नाम का असुर, जीवन के सामान्य-प्रकाशरहित-इन्द्रिय-क्रियाओं के शासक दस्यों ! तुम (वरीयः दूरम् इत) दूर अत्यधिक दूर स्थान के प्रति चले जाओ, अथवा यहाँ से बहुत दूर भाग जाओ, यदि शुभ चाहते हो तो। (गावः) अन्तर्ज्योतिष रश्मि (ऋतेन) सत्य से (मिनतीः) गुहाद्वार को तोड़कर अज्ञानान्धकार का विनाश करेंगे (उत् यन्तु) अवचेतन निम्नतम गुहा अथवा पाताल से अथवा ऊर्ध्व को जाओ। अथवा (मिनतीः) तुम्हारे द्वारा अवरुद्ध, बन्दीकृत और बाध्यमान(गावः) (गावः) (ऋतेन) सत्य की तेज शक्ति से, सत्यवाणी को उच्चारण करके (उत् यन्तु) चेतन पाताल से बाहर आओ। (निगूळ्हाः याः) जो प्रच्छन्न गाय(बृहस्पतिः) सर्जनशील अन्तर्वाणी अधिपति देव बृहस्पति(अविन्दत्) अन्वेषण करते है (सोमः) आनन्दामृतत्व के अधिपति सोमदेव, (ग्रावाणः) सोमरस निष्पीडक शक्ति, (विप्राः ऋषयः च) और ज्ञान प्रदीप्त द्रष्टा अन्वेषण करते हुए अन्त में प्राप्त होंगे॥११॥

व्याख्या – हे पणि तुम यहाँ से बहुत दूर देश को चले जाओ। तुम्हारे द्वारा अपहृत गायें ऋत सत्त्व होने से सदा बंधन में नहीं रहती द्वार को तोडकर बाहर की और दौड़ेगी। अथवा मिनती व्यत्यय कर्मणिशता। तुम्हारे द्वारा बाध्यमान वे गायें ऋतु स्तुति से इन्द्र की सहायता से बृहस्पति आदि पर्वत के औषधियों का ज्ञान रखने वाले गाय आदि को बृहस्पति अन्वेषण करते हुए प्राप्त करेंगे। तथा पत्थर पर सोम का घर्षण करने वाले विप्र मेधावि ऋषि अंगिरस प्राप्त करेंगे। विद्लृ लाभे तुदादि से छन्द में लुङ् लङ्ि लटः इससे भविष्यदर्थ में लङ् शे मुचादीनाम इससे नुमागम॥११॥

सरलार्थ – हे पणि यहाँ से दूर देश को चले जाओ। गायें कष्ट पा रही हैं। तुम्हारे द्वारा अपहरण की गई गायों किस गुप्तस्थान में हैं ये वे इन्द्र, बृहस्पति, सोम से अभिषेक करने वाले ग्रावाण, ऋषि और अङि्गरस जानते हैं। (अर्थात् ये सभी यहाँ आयेंगे इसलिए आप यहाँ से दूरदेश को पलायन कर जाओ।)

व्याकरण

- **अविन्दत्** – यहाँ तुदादिगण की विद्लृ लाभे इस धातु से छन्दसि लुङ् लङि् लटः इस सूत्र से भविष्य अर्थ में लङ् को अडागम करने पर शेमुचादीनाम इससे नुडागम प्रक्रियाकार्य में अविन्दत् यह रूप बनता है।

पाठगत प्रश्न 26.4

1. पणिगण किसको बहन के स्वरूप में मानते है?
2. आजगन्थ इसका क्या अर्थ है?
3. सरमा को पणिगण के पास किसने भेजा?
4. अपहृत गायें किस गुप्तस्थान पर है ये कौन जानता है?
5. इन्द्रादि से अपनी आत्मा की रक्षा के लिए सरमा ने पणियों का क्या उपदेश दिया?

26.3 सरमा पणि संवाद सूक्त का सार

वैदिक साहित्य में ऋग्वेद चारों वेदों में ही अत्यन्त प्रसिद्ध है। वहाँ ऋग्वेद के दशम मण्डल का एक सौ आठवाँ सूक्त सरमा पणि संवाद सूक्त है। वैदिक मन्त्र क्लिष्ट रूप से विद्यमान हैं। यहाँ सरमा पणि के मध्य में गो बिषय में हुई कथा को आश्रित करके अत्यन्त सरल रूप से यह संवाद सूक्त निर्मित है। यह घटना भी बहुत ही लोक प्रसिद्ध है।

पणि कोई क्रुर राक्षस है। पणि देवताओं की सभी गायों को चुरा लिया। सभी देव गायों की खोज में तत्पर होते है। एक बार बृहस्पति ने इन्द्र की सभा में जाकर के कहा की पणि नाम के कोई असुर ने गायों को चुरा लिया है। और रसानाम की नदी के तट पर पर्वत की गुहा में अत्यन्त गुप्त रूप से गायों को रखा है। वृत्तान्त को जानकर सरमा नाम की कोई रमणी दूत रूप से पणि के पास भेजी। अत्यन्त कष्ट से सरमा पणि के पास गई। उसके बाद पणि ने भी प्रश्न किया की किसलिए यह सुन्दरी स्वर्ग लोक से यहाँ पर आई। सरमा ने उत्तर दिया की देवों ने गायों के विषय में सभी वृत्तान्त जान लिया है। इसलिए हे पणि यहाँ से जाओ और गायें सौप दो। पणि ने गर्व के साथ कहा की मेरी रक्षा के लिए अनेक कर्मचारी नियुक्त हैं। इसलिए यदि गाय स्वीकार करने के लिए देव आये तो उनकी ही पराजय होगी। यदि आपने इन्द्रलोक छोड़ दिया है तो हमारे यहाँ बहन के रूप में रह सकती हो। यह सब सुनकर सरमा कहती है की हे पणि मेरी चिन्ता मत करो, अपनी जीवन की रक्षा के लिए गाय देकर यहाँ से शीघ्र चले जाओ। परन्तु पणि ने गायों का प्रत्यार्पण करना उचित नहीं समझा। उसके बाद इन्द्र के साथ पणि का युद्ध सम्पन्न हुआ।

और उस युद्ध में पणि को मारकर सभी गाय लेकर इन्द्र इन्द्रलोक को गया। संवाद माध्यम से यह वृत्तान्त अच्छी प्रकार से प्रकट होता है। इसलिए ही संवाद का सरमा पणि संवाद सूक्त यह नाम से प्रसिद्ध हुआ।

पाठ का सार

ऋग्वेद का दशम मण्डल का एक सौ आठवाँ सूक्त सरमा पणि संवाद सूक्त है। पणि कोई क्रुर राक्षस है। पणि देवताओं की सभी गायों को चुरा लिया। सभी गायों की खोज में तत्पर होते है। एक बार बृहस्पति इन्द्र की सभा में आकर बताते है की पणि नाम का कोई असुर ने गायों को चुरा लिया है। और फिर रसानाम की नदी के समीप में किसी पर्वत की गुफा में अत्यन्त गुप्तरूप से गायों को स्थापित किया। वृत्तान्त को जानकर सरमा नाम की कोई रमणी देव दूती रूप में पणि के पास भेजी गई। अत्यन्त कष्ट से सरमा पणि के समीप गई। उसके बाद पणि ने भी प्रश्न किया की किसलिए स्वर्गलोक से यह सुन्दरी यहाँ पर आयी। सरमा ने उत्तर दिया की देवों ने गायों के विषय में सभी वृत्तान्त जान लिया है। इसलिए हे पणि गायों को सौपकर यहाँ से चले जाओ। पणि ने गर्व के साथ कहा की मेरी रक्षा के लिए अनेक कर्मचारी नियुक्त है। इसलिए यदि गायें स्वीकार करने के लिए देव आयेंगे तो उनकी ही पराजय होगी। यदि आपको इन्द्रलोक से पीड़ा दी गई है तो आप हमारी बहन के रूप में यहाँ पर रह सकती हो। इन सब को सुनकर सरमा ने कहा की हे दुष्ट मेरी चिन्ता मत करो, अपने जीवन की रक्षा के लिए गायों को देकर यहाँ से शीघ्र चले जाओ। परन्तु पणि ने गायों को सौपना उचित नहीं समझा। उसके बाद इन्द के साथ पणि का युद्ध सम्पन्न हुआ। और उस युद्ध में पणि को मारकर सभी गायों को स्वीकार करके इन्द्र इन्द्रलोक को गये। संवाद माध्यम से यह वृत्तान्त अच्छी प्रकार से प्रकट होता है। इसलिए ही संवाद का सरमा पणि संवाद सूक्त इस नाम से सुप्रसिद्ध है।

पाठांत प्रश्न

1. सरमा पणि संवाद सूक्त का सार संक्षेप से लिखो।
2. किमिच्छन्ती सरमा प्रेदमानड् ... इस मंत्र की व्याख्या करो।
3. इन्द्रस्य दूतीरिषिता चरामि ... इस मंत्र की व्याख्या करो।
4. की दृङिन्द्रः सरमे का दृशीका ... इस मंत्र की व्याख्या करो।
5. नाहं तं वेद दभ्यं दभत्स ... इस मंत्र की व्याख्या करो।
6. इमा गावः सरमे ये ऐच्छः ... इस मंत्र की व्याख्या करो।
7. अयं निधि सरमे अद्रिबुध्नो ... इस मंत्र की व्याख्या करो।
8. एवा च त्वं सरसम् ... इस मंत्र की व्याख्या करो।
9. नाहं वेदं भ्रातृत्वं नो स्वसृजम् ... इस मंत्र की व्याख्या करो।

10. दूरमित पणयों वरीय उद् ... इस मंत्र की व्याख्या करो।
11. सरमा का चरित्र लिखो।
12. सरमा के द्वारा उपस्थापित इन्द्र स्वरूप को लिखो।
13. पणि परिचय को प्रकट करो।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

26.1

1. पणि ने सरमा के प्रति कहा।
2. भेजा यह अर्थ है।
3. इन्द्र की।
4. गाय देना स्वीकार किया।
5. कितना यह अर्थ है।

26.2

1. इन्द्र को।
2. हिंसार्थक।
3. युद्ध के विना।
4. सुन्दर यह अर्थ।
5. पणियों का।
6. पणियों के लिए।

26.3

1. पर्वत के द्वारा।
2. गायों, घोड़ों और अन्यधन के द्वारा परिपूर्ण।
3. सोमरसपान से।
4. गायों को छोड़ दो।
5. सोमपान से प्रमत्त यह अर्थ है।

26.4

1. सरमा को।
2. आयी यह अर्थ है।
3. इन्द्र आदि के लिए।
4. इन्द्र, वृहस्पति, सोम से अभिषिक्त ग्रावाण, ऋषियों और अङ्गिर ने ज्ञान लिया है।
5. यहाँ से दूरदेश को भाग जाओ।

॥ छब्बिसवाँ पाठ समाप्त ॥